antidote Indian remedies to global issues

(SOLUTIONS TO CONTEMPORARY GLOBAL ISSUES - INDIAN CULTURE AND APPROACH)

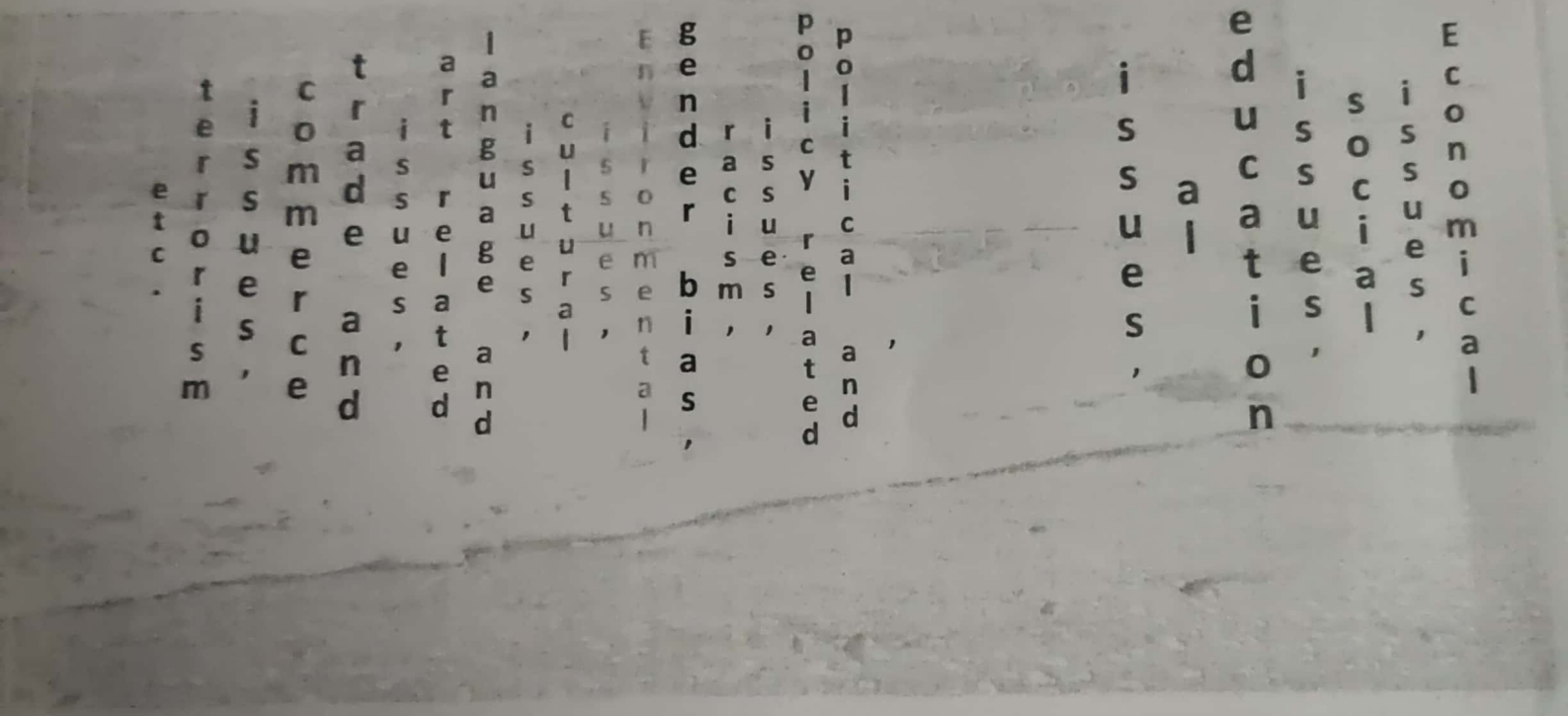

Editor

PRINCIPAL

Shri Somnath Education Society

SMT. C.P. CHOKSI ARTS & SHREE P.L. CHOKSI COMMERCE COLLEGE, VERAVAL

Scanned with CamScanner

ANTIDOTE INDIAN REMEDIES TO GLOBAL ISSUES
(SOLUTIONS TO CONTEMPORARY GLOBAL ISSUES - INDIAN CULTURE AND APPROACH)

© Editor - Prin. Dr. R. P. Mehta
©Co-editors - Dr. A. M. Chocha
- Dr.. S. J. Vaghela
- Dr. N. R. Suba
(પ્રસ્તુત પુસ્તકમાં રજૂ કરેલી દરેક બાબતોની જવાબદારી જે તે લેખનકર્તાની છે.)

પ્રાપ્તિ સ્થાન :
Shri Somnath Education Society
Smt. C. P. Choksi Arts and Shree P. L. Choksi Commerce College,
Veraval.

ISBN No. 978-93-86103-79-6

પ્રથમ આવૃત્તિ : ૨૦૧૭

કિંમત : ₹ ૩૫૦/—

Editor
PRINCIPAL
Smt. C. P. Choksi Arts and
Shree P. L. Choksi Commerce College.
Veraval.

Printer & Publisher
Kamlesh Prakashan Mandir
G-52, Neo Square, P.N. Marg,
Near Income Tax Office,
Jamnagar - 361008.
Contact : 9879427072 / 9824163463
E-mail : kamleshprakashan@gmail.com

Scanned with CamScanner

राष्ट्रीय नदी गङ्गा प्रदूषण एवं निवारण

प्रो. अर्चना दुबे
श्रीसोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, राजेन्द्र भुवन रोड़, वेरावल, जिला गीर सोमनाथ, गुजरात

गङ्गा केवल जलसंवाहिका ही नहीं अपितु त्रिविधाकार शक्ति है । आध्यात्मिकवैभव से सकल अज्ञानवारिणी चिदानन्दासंविद्रूपिणी निराकार व स्वयंप्रकाशिनी है । आधिदैविक रूप में नारी की आकृति में **अवनितल** में अवतीर्ण हो । 'दैत्यतेजांसि हिनस्ति ।' (दुर्गासप्तशती, 11/27) यह रूप देखने को मिलता है । आधिभौतिक रूप जलरूप हो श्रीगङ्गा नामोच्चारण मात्र से ही हृदय पवित्र, दर्शन से पापों का हरण, स्नान से तापापहा, पान से पुष्टितुष्टि देने वाली तथा आराधना व अर्चना से चतुवर्गफल को देने वाली है । किन्तु मानव अपने ही कर्मों से माँ गङ्गा को प्रदूषित कर विनाश का आह्वान कर रहा है । आधुनिक विकासवादी आसुरीप्रवृत्ति को अपना कर विकास के पथ पर न जाकर विनाश के पथ पर अग्रसर हैं । पर्यावरणविद् श्री सुन्दरलालबहुगुणा महोदय ने कहा भी है – One More threat to the himalyan riversis frm the continous recession of glaciers which has accelerated during recent years with recession of this glacier, a is spreading horth wards. (The Himalyas threat)

अत: गंगा का सङ्कट सभ्यता व संस्कृति का संकट है । गङ्गा रक्षा विश्व रक्षा व आत्मरक्षा है ।

अमृततयोमयीं सुरनिम्नगां भुवि समाऽऽनयनाय भगीरथः ।
यतितवानधुना किल दूषिता विमलवारिमयी क्रियतां पुनः ।।[1]

जिस अमृतजलमयी देवनदी गङ्गा को पृथ्वी पर लाने के लिए राजा भगीरथ ने प्रयास किया, वह आज दूषित हो गई है, उसे पुन: निर्मल जल वाली बनाना है । पुण्य पुञ्ज रूप निकुञ्ज (लता समूहों) में रहनेवाली, विपुल पापों के समूहों को नष्ट करने वाली, सुन्दर चंचल लहरों के विलास वाली तरल शीतल जल तरंगों वाली, मधुर घर्घर शब्द करने वाली खिले हुए पुष्पों के सुगन्धों वाली, कल-कल ध्वनि से क्रीड़ा करने वाली, छल-छल से अपने दु:ख को व्यक्त करने वाली, झर्झर ध्वनि से हँसने वाली देव नदी को फिर से निर्मल जल वाली बनाया जाये ।[2]

अथ चतुर्दशपापमपावनं त्रिपथगा-शुचिरोधसि वर्ज्यताम् ।
स्मरत पद्मपुराणवचांसि भो, विमलवारिमयी क्रियतां पुनः ।।[3]

श्रीगङ्गा के पवित्र तट पर चौदह कार्य नहीं करने चाहिए । – शौच, कुल्ला, बाल झाड़ना, निर्माल्य डालना, मैल छुड़ाना, शरीर मलना, हँसी मजाक करना, दान लेना, रतिक्रिया, दूसरे तीर्थ के प्रति अनुराग, दूसरे तीर्थ की महिमागान, कपड़े धोना, जलपीटना, तैरना । यह पुराणों का वचन है, इसे स्मरण करना चाहिए ।

---

1 रक्षत गङ्गाम्, एकादश सर्ग, 11/1, पृ.सं. 215

2 सकलजीव-सुजीवनदायिनी निखिल-पादपमूल-रसायनी ।
भारतभूमि-महत्त्वविधायिनी विमलवारिमयी क्रियतां पुनः ।। – वही, 11/5

3 (i) रक्षत गङ्गाम्, 11/6

(ii) गंगा पुण्य जलां प्राप्य चतुर्दश विवर्जयेत् । शैचमाचमनं केशनिर्माल्यमधमर्षणम् ।।
गात्रसंवाहनं क्रीडा प्रतिग्रहमथो रतिं अन्यतीर्थरतिं चैव अन्यतीर्थप्रशंसनम् ।
वस्त्रत्यागमथाघातसंतारं च विशेषतः ।। - ब्रह्माण्ड पुराण - प्रायश्चित तत्त्व 1/535

(iii) मूत्र वाऽथ पुरीषं वा गङ्गतीरे करोति यः ।
न दृष्ट्वा निष्कृतिस्तस्य कल्पकोटिशतैरपि ।।
श्लेष्माणं वापि निष्ठीवं दूषिकाङ्गं वाऽश्रु वा मलम् ।
गङ्गातीरे त्यजेद् यस्तु स नूनं नारकी भवेत् ।। – पद्मपुराण, 7/8/98-99

(iv) परिधेयाम्बराम्बूनि गङ्गास्त्रोतसि न त्यजेत ।
न दन्तधावनं कुर्यात् गङ्गागर्भे विचक्षणः ।।
कुर्याच्चेन्मोहतः पुण्यं न गङ्गास्नानजं लभेत् ।। – पद्मपुराण, 7/8/44-45

Scanned with CamScanner

नगरभूमिगता: खलु नालिका: मल-पुरीष-निमित्त-सुनिर्मिता:
सुरनदीं प्रति यान्तु न ता यथा नवविध: प्रखरैरुपयुज्यताम् ।।
'सुलभ' इत्यधुना परिचाल्यते मलचयाय नवीनविधिर्यथा ।
विविधलाभकरी रचनात्मिका कृतिरनुक्रियतां परिशोधिका ।।[4]

नगर में अनेक सीवर-लाइनें भूमि के अन्दर बिछाई गई है । जल देव नदी में न गिरे, इसलिए प्रखरमति वाले तकनीकि वेत्ताओं को नवीन विधि का उपयोग करना चाहिए । एकत्रित करने की नवीन विधि 'सुलभ' जैसे आज कल चलाई जा रही है । उसी प्रकार विभिन्न लाभकारक रचनात्मक कार्यों को प्रारम्भ करना चाहिए, जो गङ्गा को परिशुद्ध करने में सहायक हों । विभिन्न प्रकार के कुत्सित पदार्थ से निकले कार्बनिक तत्त्वों से बने केमिकल्स, जो सिन्थेटिक कहलाते हैं, इन प्रकृति के शत्रुओं को दूर भगाना चाहिए । जो गन्दा जल देवनदी की ओर निरन्तर बह रहा है इसको रोकने का प्रयत्न होना चाहिए । बहुशास्त्रविशारद् विद्वान् वैज्ञानिकों, यन्त्रविदों, तकनीकिवेत्ताओं, इंजीनियरों को ऐसा नवीन यंत्र का निर्माण करना चाहिए, जिससे सभी कूड़े का ढेर नदी में न गिरने के बजाय एक अलग कुण्ड में संचित हो और उसका कहीं अन्यत्र उपयोग हो ।[5] आज हिमालय से पेड़ों, लताओं आदि को अन्धाधुंध काटा जा रहा है । इस मुख्य समृद्धि का हरण करने वाले विपत्ति कारक बन विनाश को शीघ्र रोकिये । हिमालय अनेक चमकती औषधियों, जड़ी-बूटियों और वृक्षों की उत्पत्ति स्थली है, जहाँ से देव नदियों के जल में अमृत्व बहता है । हिमालय से उत्पन खनिज-गन्धक-धातु तथा जीवनवर्धक रसायनों से मिश्रित होकर गङ्गा की धारा बहती है, उसमें सभी पोषकतत्त्वों का समावेश हो जाता है, इसलिए जानकर लोगों ने इसे अमृत धारा कहा है । अच्छे बर्त्तन में बहुत दिनों तक रखे रहने पर भी यह खराब नहीं होता और अनुपम, धवल और निर्मल बना रहता है, इसीलिए अमृत है ।[6] पर्वत भूमि सदा वृक्षों, लताओं और घासों से हरी-भरी रहे । पर्वत शृङ्खालाओं वनराजियों से सुशोभित हो । ग्लेशियर्स गर्म हवा के झोंकों से न पिघलें, वनदेवता वन्य वृक्षादिकों से सुसज्जित रहे ।[7]

1983 में **यूनेस्को** के एक वैज्ञानिक दल ने हरिद्वार के गंगाजल का सर्वेक्षण-परीक्षण कर पाया कि गंगा में मुरदों हड्डियों आदि विभिन्न-प्रदूषकों के बहने पर भी उसके कुछ ही फीट नीचे जल पूर्ण शुद्ध है ।[8] हिन्दी के कवि रसखान ने गंगा जल के औषधीयगुणों के विषय में उचित ही कहा है –

ए री सुधामयी भागीरथी, सब पथ्य-कुपथ्य बने तुहि पोसें,
आक धतूरो चबात फिरै, विष खात फिरै सिव तोरे भरोसे ।।

गङ्गाजल का प्रभाव – आयुर्वेद के मतानुसार नर्मदा का जल तारूण्य को स्थाई रखने वाला और गंगाजल रोगों का शमन करने वाला कहा गया है । कई व्यक्तियों ने गंगाजल के नियमित सेवन से कब्ज, मन्दाग्नि, पुराना ज्वर संग्रहणी, श्वास आदि से मुक्ति प्राप्त की है, क्योंकि गंगाजल में स्वत: शुद्ध रहने और शुद्ध करने की शक्ति है । गंगाजल में कृमिनाशक अपूर्वगुण है । इस जल से क्षयरोग, हैजा, प्लेग, मलेरिया आदि संक्रामक रोग नष्ट हो जाते हैं । गंगा में हैजे से मरे व्यक्ति की लाश को डाला गया तो अनुसंधान द्वारा पाया गया है कि लाश में भले ही हैजे के असंख्य कीटाणु हो फिर भी उसके कुछ फीट दूर का जल कीटरहित होता है । कई वैज्ञानिकों ने गंगाजल का परीक्षण करके उसे रोगरहित पाया और उसकी

---

4 (i) वही, 11/9-10

(ii) डॉ. विन्देश्वर पाठक ने सफाई और पर्यावरण के क्षेत्र में सुलभ आन्दोलन की शुरुआत की । उन्होंने पटना में 'सुलभ इण्टर नेशनल' की स्थापना की 1994, में वे इन्दिरागाँधी, प्रियदर्शिनी पुरस्कार से सम्मानित हुए ।

5 अयि बुधा बहुशास्त्रविशारदा विरचयन्तु नवीनसुयन्त्रकम् ।
सकल-दुषणहेतुरवस्करो निचयकुण्डगत: क्रियतां चिरम् ।। – रक्षत गङ्गाम् 11/13

6 खनिज-गन्धक-धातु-रसायनैर हिमगिरिप्रभवैश्च सुमिश्रतै: ।
सकलपोषकतत्त्वमयी ह्यसा वमृत्तधारयुताऽभिमता बुधै: ।। – वही, 11/16

7 हिमनदा: तरला न भवन्तु ते प्रखरतापयुतै: पवनैर्हता: ।
विविध-पादप-गुल्म-तृणादिभिर् विलसतु प्रचुरं वनदेवता ।। – वही, 11/19

8 गंगा अतीत एव वर्तमान, पृ.सं. 70

Scanned with CamScanner

अलौकिक शक्तियों का प्रमाण पाया । गंगाजल के आधार पर ही कुछ डॉक्टरों ने राजयक्ष्मा की दवा तैयार की है । कोढ़ दूर करने की शक्ति भी **गंगाजल** में पाई जाती है ।[9]

इतिहास भी इस बात का साक्षी है । उदाहरणस्वरूप इंग्लैण्ड के सम्राट् एडवर्ड सप्तम के राजतिलक समारोह में जाते समय जयपुर के राजा सवाई माधोसिंह द्वितीय शुद्ध चाँदी के दो घड़ों में हरिद्वार से गङ्गा का छः सौ पंद्रह लीटर जल ले गए थे । ये घड़े उनकी मृत्यु के पश्चात् 1922 में **सिटी पैलेस** में रख दिए गए । जब 1962 में उन्हें खोला गया तब भी गंगाजल पूर्ण स्वच्छ था ।[10] विश्वविश्रुत पर्यटक इब्नबतूता ने लिखा है कि सुलतान मुहम्मद तुगलक के लिए गंगाजल बराबर दौलताबाद (पुरानी दिल्ली) लाया जाता था । इसके यहाँ पहुँचने में चालीस दिन लगते थे । फ्रांसीसी यात्री टैवर्नियर ने लिखा है कि सुदूर दक्षिण के हिन्दुओं के विवाह के अवसर पर भोजन के उपरांत अतिथियों को गंगाजल पिलाने की प्रथा थी । जो जितना अमीर होता था उतना ही अधिक गंगाजल पान था ।

अकबर का भी गंगाजल से अधिक प्रेम था । वह उसे अमृत मानते थे । वे घर या बाहर गंगाजल को ही प्रयोग में लाते थे । मराठा पेशवा राजा, राजस्थान के राजपूत राजा भी हरिद्वार से गंगाजल मँगवाकर उपयोग करते थे । उस समय एक काँवर का व्यय बीस रूपये पड़ता था । पंजाब में रहने वाला अकबर हरिद्वार से जल मँगवाता था और आगरा व फतेहपुरसीकरी रहने वाले सोरों से गंगाजल मँगवाते थे ।[11] काशीराम ने ब्रिटेन में गंगाजल का कुँआ बनवा दिया । विजयनगर ने काशीराज से युद्ध जीता तो संधि की शर्त थी कि हाथियों पर गङ्गाजल के घड़े रखकर भेजे जायें जिससे वहाँ का सरोवर भर सकें ।[12] कट्टर मुसलमान शासक औरंगजेब का काम भी गंगाजल के बिना नहीं चलता था । शाहजादा दाराशिकोह का चिकित्सक बर्नियर भारत प्रवास के विवरण में लिखता है कि ''औरंगजेब की खाने-पीने की वस्तुओं के साथ आगरे व दिल्ली से मंगाया **गंगाजल** भी रहता था, जब औरंगजेब सफर पर जाता था तो गंगाजल ऊटों पर साथ-साथ ले जाता था ।[13]

रियाजु-स-सुल्तान' के अनुसार मधुरता, स्वाद और हल्केपन में गङ्गाजल के बराबर कोई दूसरा जल नहीं है ।[14] अनेक मुरदों, हड्डियों तथा प्रदूषण को अपने में समाए हुए गंगाजल का आचमन करने से भी व्यक्तियों को क्षति नहीं पहुँचती, इसका बहुत बड़ा कारण है इसका औषधीय गुण । वैज्ञानिकों ने विभिन्न प्रयोग करके गंगाजल में **जीवाणु-भोजियों (बैक्टीरियो-फाजो)** तथा **रासायनिक तत्त्वों दोनों का योग होता है** । इसी कारण यह असाधारण व सब जलों का मुकुट बन गया है ।

परीक्षण हेतु डॉक्टर देवेन्द्र स्वरूप भार्गव ने ''कानपुर, वाराणसी आदि स्थानों पर नदियों में कार्बनिक पदार्थों का 50-60% भाग गंगाजल में डाला तो यह पदार्थ, जो सामान्यतः दो या इससे अधिक दिनों तक रहता है, मात्र आधे घण्टें में ही समाप्त हो गया । पटना में विभिन्न कुओं नलकूपों आदि का जल व गंगाजल अलग-अलग एकत्र कर, उसमें 65% एरारीशिया कोलाई, जीवाणु, 75% स्ट्रेप्टोकाकस और 99.50% हैजा उत्पन्न करने वाले विब्रिओं कोलेरी जीवाणु डालकर परीक्षण करने पर पता चला कि अन्य जलों में तो ये सभी जीवाणु ज्यों के त्यों बने रहे, किन्तु गंगाजल में ये सभी 24 घण्टें में खत्म हो गए ।[15]

गंगा प्रदूषण के निवारण हेतु गंगा कार्य-योजना (गंगा-एक्शन-प्लान)

(1) केन्द्रीय सरकार ने 'नदी परिषद् कानून' 1956 में पारित किया ।
(2) 'व्यापारिक जहाजरानी (संशोधन) विधेयक' 1970 में पारित किया ।
(3) जल प्रदूषण रोक और नियंत्रण परिषद विधेयक 1974 में पारित किया गया ।

---

9 गंगाजी की महिमा, पृ.सं. 6-8
10 गंगा अतीत एव वर्तमान - गंगाजल के औषधीय गुण, पृ.सं. 70
11 वही, पृ.सं. 77-78
12 धन-धन मातु गङ्ग, पृ.सं. 268
13 गंगाजी की महिमा, पृ.सं. 8
14 धन-धन मातु गङ्गा, पृ.सं. 268
15 गंगा अतीत एव वर्तमान, पृ.सं. 69-70

Scanned with CamScanner

विश्व स्वास्थ्य संगठन (1968) ने विकासशील देशों में नदी जल-प्रदूषण की समस्या की गम्भीरता से लिया है । इसी संदर्भ में क्षेत्रीय कार्यालय से सम्बन्धित देशों की एक संगोष्ठी हुई थी, जिसमें नदी जल-प्रदूषण पर विस्तार से चर्चा की गई थी ।

(5) 1977 में संयुक्त राष्ट्र ने पहला अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का जल सम्मेलन आयोजित किया । इस सम्मेलन में प्रथम बार पेय जल और स्वच्छता के विषय को अन्य जल मुद्दों से अलग किया और यह सुझाव दिया कि शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों का सन् 1990 तक जल उपलब्ध करने के लिए, जल गुणवत्ता तथा मात्रा के वास्तविक मानकों के साथ, पूर्व में अभिशंसित अन्तर्राष्ट्रीय दशक नीति को अपनाने के कार्यक्रम सम्पन्न किये जाए ।

(6) नदी जल प्रदूषण समस्या की गम्भीरता को ध्यान में रखते हुए, वाराणसी में फरवरी 1983 में 'नदी प्रदूषण एवं मानव स्वास्थ्य' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था, जिसमें नदी जल-प्रदूषण से जुड़े पूरे देशों से आए शोधकर्त्ताओं ने नदियों में होने वाले प्रदूषण की चर्चा की थी । जिससे पता चलता था कि भारत की अत्यधिक प्रदूषित नदियों में से गंगा एक प्रमुख नदी है ।

(7) दिसम्बर 1984 में पर्यावरण विभाग में स्वीकृत रिपोर्ट के आधार पर गंगा के प्रदूषण की समस्या से निपटने के लिए एक कार्यकारी योजना तैयार की । इस योजना में नदी के किनारे बसे प्रथम श्रेणी के 27 शहरों में घरेलू गंदगी को गंगा के बजाय किसी और स्थान पर इकट्ठा करने और उसे साफ करने की व्यवस्था की गई ।

(8) 5 फरवरी 1985 को प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ने राष्ट्र को संबोधित करते हुए यह घोषणा की थी कि ''गंगा भारत की प्रतीक है ।'' तभी राजीव गाँधी सरकार ने ''गंगा एक्शन प्लान (GAP)' बनाया था, जिसका मुख्य उद्देश्य था कि गंगा और उसकी सहायक नदियों के जल में होने वाले प्रदूषण को दूर कर उन्हें स्वच्छ रखा जाए । परन्तु कुछ स्थानों पर सीवरेज प्लांट्स लगाने के अलावा वस्तुत: कोई खास काम नहीं हुआ । दिसम्बर 2000 की 'कम्पट्रोलर आडिटर जनरल (GAG)' तथा केन्द्र सरकार की 'जन-लेखा समिति (PAC)' के अनुसार 1985 से लेकर 2000 तक 'गंगा एक्शन प्लान' के अन्तर्गत 987.88 करोड़ रूपये खर्च किए हुए थे ।

(9) घोषणा के एक माह के भीतर ही केन्द्रीय गंगा के प्राधिकरण का गठन हो गया । 5 जून 1985 में पर्यावरण विभाग में इस कार्यक्रम के संचालन के लिए एक अलग से अनुभाग बना दिया गया । सातवीं पंचवर्षीय योजना में इस कार्य के लिए 240 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया ।

(10) गंगा में प्रदूषण नियंत्रण के लिए 1986 में गंगा कार्य योजना प्रारम्भ की गई है । इसके अन्तर्गत नदी के तटवर्ती क्षेत्रों पर बसे शहरों से निस्तारित अपशिष्टों से नदी को मुक्त रखना प्रमुख कार्य रखा गया । यह ऋषिकेश से कोलकात्ता तक गंगा को प्रदूषण मुक्त करने की योजना है ।

(11) केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने गंगा को प्रदूषणरहित करने की योजना 5 जून, 1993 को दिल्ली में शुरु की गई । इसमें दिल्ली के साथ हरियाणा के सात नगरों-यमुनानगर, जगाधारी, करनाल, पानीपत, सोनीपत, गुड़गाँव और फरीदाबाद तथा उत्तरप्रदेश के ग्यारह नगरों-सहारनपुर मुजफ्फरनगर, गाजियाबाद, नोएडा, मथुरा, वृन्दावन, आगरा, इटावा, लखनऊ, सुल्तानपुर और जौनपुर को शामिल किया जाएगा ।

(12) भारत सरकार ने वर्ष 2001 में गंगा कार्य योजना का शुभारम्भ किया है, जिसमें उत्तरप्रदेश जल निगम, केन्द्रीय प्रदूषण बोर्ड और केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग की भूमिका महत्त्वपूर्ण रहेगी ।

(13) 4 नवम्बर 2008 को प्रधानमंत्री ने गंगा नदी को 'राष्ट्रीय नदी' घोषित किया । उन्होंने गंगा के पारिस्थितिकी प्रवाह को सुनिश्चित करने के लिए दिनांक 17 फरवरी 2009 को एक 'राष्ट्रीय नदी बेसिन प्राधिकरण' भी गठित किया गया, जिसके अध्यक्ष भारत के प्रधानमंत्री हैं तथा जिन-जिन राज्यों से होकर गंगा गुजरती है, उन राज्यों तथा उत्तराखण्ड, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखण्ड तथा पश्चिमी बंगाल के मुख्यमंत्री प्राधिकरण के सदस्य बनाए गए हैं ।

गंगा को 'राष्ट्रीय नदी' घोषित करने की स्थिति ऐसे ही नहीं बनी, इसके पीछे कई व्यक्तियों, संगठनों के प्रयास थे । जून 2008 में 'जी.डी. अग्रवाल' जो स्वयं एक पर्यावरणविद् हैं तथा प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में सिविल तथा वातावरणीय अभियांत्रिकी के विभागध्यक्ष थे, उन्होंने गंगा के पारिस्थितिकी स्वरूप को अक्षुण्ण बनाये रखने की दृष्टि से गंगा की ऊपरी घाटी में बन रहे बांधों और विद्युत्-गृहों को अविलम्ब रोकने के लिए 'आमरण-अनशन' किया ।

Scanned with CamScanner